

धर्मना सिद्धांतो: आधुनिक कायदाમાં ભગવદ ગીતાનું યોગદાન (INTERSECTIONS OF DHARMA: LEGAL PRINCIPLES IN THE BHAGAVAD GITA)

Dr. Akta Mehta

Assistant professor
I. M. Nanavati Law College,
Gujarat university
mehtaakta@gmail.com

સાર

આ સંસોધન પેપર ભગવદ ગીતામાં પ્રસ્તુત કાયદાના દાર્શનિક પાયાની શોધ કરે છે, સમકાલીન કાનૂની માળખા સાથે તેની સુસંગતતાની તપાસ કરે છે. તે ધર્મ, કર્મ, ન્યાય અને નૈતિક શાસન જેવા ખ્યાલો પર ધ્યાન કેન્દ્રિત કરે છે, દલીલ કરે છે કે આ સિદ્ધાંતો આધુનિક કાનૂની પ્રણાલીઓ માટે મૂલ્યવાન આંતરદૃષ્ટિ પ્રદાન કરી શકે છે.

પ્રસ્તાવના

સક્તા: કર્મણ્યવિદ્વાંસો યથા કુર્વન્તિ ભારત ।
કુર્યાદ્વિદ્વાંસ્તથાસક્તશ્ચિકીર્ણુલોકસઙ્ગહમ્ ॥ ૨૫ ॥

- ભગવદ ગીતા 3.25

“જેવી રીતે અજ્ઞાની મનુષ્યો ઇળ પ્રતિ આસક્તિ રાખીને તેમનાં કર્તવ્યોનું પાલન કરે છે, તેવી રીતે હે ભરતવંશી! વિદ્વાનજનોએ સામાન્ય લોકોને સાચા માર્ગે દોરવા માટે અનાસક્ત રહીને કર્મો કરવાં જોઈએ.”

આ શ્લોકમાં સક્તા: અવિદ્વાંસ: જેવા શબ્દોની અભિવ્યક્તિનો પ્રયોગ એવા લોકો માટે કરવામાં આવ્યો છે કે જેઓ હજી દૈહિક ચેતનામાં સ્થિત છે અને પરિણામે સાંસારિક સુખો પ્રત્યે આસક્ત છે પરંતુ તેઓને શાસ્ત્ર-સંમત વૈદિક કર્મકાંડમાં પૂર્ણ શ્રદ્ધા છે. આવા લોકોને અજ્ઞાની કહેવામાં આવે છે, કારણ કે તેમની પાસે શાસ્ત્રોનું પુસ્તકિયું જ્ઞાન હોવા છતાં તેઓ ભગવદ-પ્રાપ્તિના પરમ લક્ષ્યને મનથી ગ્રહણ કરી શકતા નથી. આવા અલ્પજ્ઞાની લોકો આળસ અને સંદેહથી રહિત, સંનિષ્ઠતાથી, શાસ્ત્રીય કર્મકાંડોને અનુસરીને પોતાના કર્તવ્યોનું પાલન કરે છે. તેઓને દૃઢ વિશ્વાસ હોય છે કે વૈદિક કર્તવ્યો અને વિધિઓનું પાલન કરવાથી તેમની કામનાને અનુરૂપ સાંસારિક સુખોની પ્રાપ્તિ થશે. જો આ લોકોનો કર્મકાંડમાંથી વિશ્વાસ તૂટી જાય તો ભક્તિના ઉચ્ચતર સિદ્ધાંતોમાં શ્રદ્ધાનાં ઉદય વિના તેઓ દિશાવિહીન થઈ જાય છે.

ભગવદ ગીતા, 700 શ્લોકોનો હિંદુ ધર્મગ્રંથ, અર્જુન અને ભગવાન કૃષ્ણ વચ્ચેનો સંવાદ છે, જે ગહન નૈતિક અને નૈતિક દુવિધાઓને સંબોધિત કરે છે. જેમ જેમ સમાજનો વિકાસ થતો જાય છે તેમ તેમ નૈતિક સિદ્ધાંતો પર આધારિત કાયદાકીય માળખાની જરૂરિયાત સર્વોપરી બની જાય છે. આ પેપર એવું માને છે કે ગીતાના કર્તવ્ય (ધર્મ) અને ન્યાયીપણાના ઉપદેશો સમકાલીન કાયદાકીય પ્રણાલીઓને સમજવા અને સુધારવા માટે સમૃદ્ધ સ્ત્રોત પ્રદાન કરે છે.

મુખ્ય ખ્યાલો

ધર્મ (કરજ)- ધર્મ એ આધ્યાત્મિક શિસ્ત સાથે જોડાયેલા નૈતિક કાયદાનો ઉલ્લેખ કરે છે જે વ્યક્તિના જીવનને માર્ગદર્શન આપે છે.

<https://www.gapbhasha.org/>

"कर्मण्ये वहिकरस्ते मा इलेषु कदायना."- लगवद गीता 2.47

(तमने तमारी निर्धारित इरजो करवानो अधिकार छे, परंतु तमे तमारा कार्योना इण माटे हकदार नथी.)

अर्थघटनः आ श्लोक परिणामो साथे जोडाए कर्था विना पोतानी इरज बजाववाना महत्व पर भार मूके छे, येक भ्याल जे कानूनी जवाबदारीओने समांतर करे छे.

गीतामां, कृष्ण परिणामोनी आसक्ति विना पोतानी इरज निभाववाना महत्व पर भार मूके छे. आ भ्याल कानूनी जवाबदारीओने समांतर करे छे, ज्यां व्यक्तिओये व्यक्तिगत लाभ अथवा नुकसानने ध्यानमां लीधा विना कायदानुं पालन करवुं आवश्यक छे. उदाहरण तरीके, कायदाने निष्पक्षपणे लागु करवानी न्यायाधीशनी इरज धर्म करवा माटेनी गीतानी कल्पनाने प्रतिबिंबित करे छे.

कर्म (किया)- कर्म कारण अने असरना सिद्धांतने दर्शावे छे, ज्यां दरेक कियाना परिणामो होय छे.

"येवं भूत-नाम सृष्ट्वा, तस्माद् यज्ञभावाः."- लगवद गीता 3.16

(बलिदान साथे विश्वनुं सृजन कर्था पछी, निर्माताये कह्युं: "आना द्वारा तमे प्रचार करशो; आ तमारी छखओनुं दूध आपनार बनवा हो.")

अर्थघटनः आ श्लोक कानूनी संदर्भोमां कर्मना सिद्धांत साथे संरेमित, कियाओ अने तेना परिणामोनी आंतरसंबंधितताने प्रकाशित करे छे.

आ सिद्धांत अपकृत्यना कायदा साथे नजकथी संरेमित छे, ज्यां कार्यये जवाबदारी तरङ्ग होरी शके छे. गीतामां, कृष्ण अर्जुनने तेमनी इरज अनुसार कार्य करवानी सलाह आपे छे, भारपूर्वक जणावे छे के कार्यये तेमनी संभवित असरनी जागृति साथे करवी जोछये, जेम के व्यक्तिओये तेमनी कियाओनी कानूनी असरोने ध्यानमां लेवी जोछये.

न्याय अने निष्पक्षता- गीतामां न्यायने धर्मना आवश्यक पासां तरीके दर्शाववामां आव्यो छे, जे सदाचारीओनुं रक्षण अने दृष्टोने सजानी भातरी आपे छे.

"श्रद्धवल लभते ज्ञानम्."- लगवद गीता 4.40

(जे व्यक्ति विश्वास धरावे छे ते ज्ञान प्राप्त करी शके छे.)

अर्थघटनः न्यायनुं मूण समजए अने शाएपएमां छे, जे सूचवे छे के न्यायी व्यवस्था ज्ञान अने औचित्य पर आधारित होवी जोछये.

गीतानो प्रामाणिकता परनो भार वितरण न्याय (संसाधनोनुं वाजबी वितरण) अने सुधारात्मक न्याय (त्रुटीओने सुधारवी) ना समकालीन कानूनी सिद्धांतो साथे पडघो पाडे छे. कानूनी प्रणालीओये सामाजिक व्यवस्था अने नैतिक संतुलन जाणववा अंगे कृष्णना उपदेशोने पडघो पाडता, न्यायीता माटे प्रयत्न करवो जोछये.

नैतिक शासन- गीतामां नैतिक नेतृत्वने प्रकाशित करवामां आव्युं छे, ज्यां शासकोने धर्मनुं समर्थन करवानुं काम सोंपवामां आवे छे.

"धर्म क्षेत्रे कुरु क्षेत्रे सामवेता युयुत्सवह."- लगवद गीता 2.31

(धर्मना क्षेत्रमां, कुरुक्षेत्रना युद्धना मेदानमां, येकठा थया अने लडवा आतुर हता.)

अर्थघटनः संघर्षमां धर्मनो संदर्भ व्यक्तिनी नैतिक जवाबदारीओने समजवानी जरूरियातने रेभांकित करे छे, जे कानूनी सिद्धांतो माटे निर्णायक छे.

आधुनिक शासन प्रणालीओ जहरे अधिकारीओ माटे कायदाना शासन अने नैतिक घोरणो पर भार मूकती आ आवश्यकताने पडघो पाडे छे. न्यायी नेतानी कृष्णनी द्रष्टि कायदामां पारदर्शिता, जवाबदारी अने नैतिक शासन माटेना समकालीन आहवानने प्रतिबिंबित करे छे.

आधुनिक कायदा माटे अरजु

कानूनी सिद्धांतः गीताने कुदरती कायदाना सिद्धांत साथे निर्धारित करी शकाय छे, जे माने छे के कायदो नैतिक व्यवस्थाने प्रतिबिंबित करे छे. आ जोडाए नैतिकता अने कायदेसरता वच्येनी आंतरिक कडी पर भार मूके छे.

नैतिक द्विधा ठोली थाय तेवा चोक्कस कानूनी केसोनुं विश्लेषण गीताना सिद्धांतोना व्यवहारिक उपयोगने समजावी शके छे. दाभला तरीके भुल्लासा साथे संकलायेला किस्साओ अर्जुनना संघर्षने प्रतिबिंबित करती इरज विदुड वझदारीनी

यर्थाओनुं कारण बनी शके छे.

नैतिक दृविधाओने संबोधवा, जेम के कानूनी प्रेक्टिशनरो द्वारा सामनो करवो पडे छे, गीताना आंतरदृष्टिथी लाभ मेणवी शके छे. उदाहरण तरीके, ग्राहकनी वझादारीने न्याय साथे संतुलित करवुं इरज परना कृष्णना सलाहकार साथे संरेमित थाय छे.

निष्कर्ष

भगवद गीता न्याय, इरज अने नैतिक शासननी प्रकृति विशे कलातीत आंतरदृष्टि प्रदान करे छे, जे आधुनिक कायदाकीय माणभाने माहिती आपी शके छे अने तेने वधारी शके छे. आ सिद्धांतोने ऐकीकृत करीने, कानूनी प्रणालीओ समकालीन पडकारोने वधु असरकारक रीते संबोधित करीने, वधु न्याय अने नैतिकतानी छय्छा राभी शके छे. भावि संशोधन गीता द्वारा प्रेरित चोक्कस कायदाकीय सुधारओ अथवा कानूनी शिक्षणमां तेना उपयोगनी शोध करी शके छे.

भगवद गीता गहन शाणपण आपे छे जे आजना संदर्भमां सुसंगत रहे छे, भास करीने न्याय, इरज अने नैतिक शासनने लगता. धर्म परनो तेनो भार - न्यायी इरज - समाजमां व्यक्तियो अने संस्थाओनी नैतिक जवाबदारीओने समजवा माटेनो पायो पूरो पाडे छे.

भगवद गीतानी कालातीत आंतरदृष्टिने समकालीन कायदाकीय प्रणालीओमां वण्ट करीने, आपणे वधु न्यायी अने नैतिक समाजनुं निर्माण करवानी छय्छा राभी शकीछे छीछे. आ सिद्धांतो ऐक नैतिक होकायंत्र प्रदान करे छे जे कानूनी प्रेक्टिशनरो अने नीति घडनाराओने आधुनिक शासन अने सामाजिक पडकारोनी जटिलताओने संबोधवाना तेमना प्रयत्नोमां मार्गदर्शन आपी शके छे. जेम जेम आपणे आ जोडाणोनुं अन्वेषण करवानुं यालु राभीछे छीछे तेम, अमे कायदाकीय माणभा तरङ आगण वधीछे छीछे जे मात्र कायदाने समर्थन आपे छे ऐटलुं ज नहीं परंतु न्याय, इरज अने मानवताना ठोडा मूत्योने पण मूर्त बनावे छे.

संदर्भो

- [1] भगवद गीता गांधीना कहेवा प्रमाणे, महात्मा गांधी. न्यू योर्क: भगवद गीता: अ न्यू कोमेन्टरी, 1948. गांधीजुनुं अर्थघटन अहिंसा अने नैतिक ज्वन पर केन्द्रित छे.
- [2] पुनर्स्थापित न्याय अने गीता, ऐ.वी. राव. ध जर्नल ओफ लो ऐन्ड सोशियल पोलिसी, 2021.
- [3] विविध विद्वानो तरङ्गथी भगवद गीताना अनुवादी